****

Vidyapati

**Born** 1352

**Died** 1448

**Poetry:**

# **तीलक लगौने धनुष कान्ह पर टूटा बालक ठाढ़ छै / विद्यापति**

तीलक लगौने धनुष कान्ह पर टूटा बालक ठाढ़ छै  
घुमि रहल छै जनकबाग में फूल तोरथ लेल ठाढ़ छै  
श्याम रंग जे सबसँ सन्नर से सबहक सरदार छै  
नाम पुछई छै राम कहै छै अबध के राजकुमार छै  
धनुष प्रतीज्ञा कैल जनकजी के पूरा केनीहार छै  
देस-देस के नृप आबि कढ धनैत अपन कघर छै  
कियो बीर नहि बुझि पड़ै जछि तँ जनक के धिक्कार छै  
एतबा सुनतहिं बजला लक्ष्मण ई कोन कठि पहार छै  
बुझबा में नहिं अयलन्हि जनक कें एहि ठाम शेषावगर छै  
चुटकी सँ मलि देब धनुष के ई त बड़ निस्सार छै  
उठि क विश्वामित्र तखन सँ रा के करैत ठाढ़ छै  
जखनहिं राम उठोलन्हि धनुष मचि गेल जय-जय कार छै  
धन्य राम छथि धन्य लखनजी जानैत भरि संसार छै  
साजि सखी के संग सीयाजी हाथ लेने जयमाल छै  
तीलक लगौने धनुष कान्ह पर टूटा बालक ठाढ़ छै

# **सबरी के बैर सुदामा के तण्डुल / विद्यापति**

सबरी के बैर सुदामा के तण्डुल  
रुचि-रुचि भोग लगाबायन  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
दुर्योधन के घर मेवा त्यागि प्रभु  
साग विदुर घर पाबायन  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
ग्याल-बाल जब डूबन लागै प्रभु  
हरिजी के नाम उचारायण  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
गज और ग्राह लड़ै जल भीतर  
लड़लि-लड़लि गज हारायण  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
नाक-कान जब डूबन लागै प्रभु  
हरिजी के नाम उचारायण  
हरिजी के नाम पुकारायन  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
गज के हेर सुनय यदुनन्दन  
पांव पैदल उठि धाबायन  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
नारायण के चरण-कमल पर  
सुमरि-सुमरि भन पारायण  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..  
ग्राह के आहि गजराज उबारे स्वामी  
भक्तवत्सल कहलाबायन  
शिब नारायण-नारायण-नारायण…..

# **सीताराम सँ मिलान कोना हैत / विद्यापति**

सीताराम सँ मिलान कोना हैत  
रे अन्देशबा लागि रही  
राधे-श्याम सँ मिलान कोना हैत  
रे अन्देशबा लागि रही  
पैरो सँ तीर्थ कहियो ने कयलऊँ  
कलजोरि किछु ने दाने  
मुख सँ राम कहियो ने रलटऊँ  
मोरा मोन भरल गुमाने  
रे अन्देशबा लागि रही  
सीता-राम सँ…..  
हरी मिलत हैं बहुत भाग्य सँ  
अधिक कठिनक बात  
रे अन्देशबा लागि रही  
कथी केर दीप कथी केर बाती नरय लागत दिन राति  
जारि गेल दीप मिझा गेल बाती  
मुरख रहल पछताय  
रे अन्देशबा लागि रही  
सीता-राम सँ मिलान कोना हैत रे  
रे अन्देशबा लागि रही

# **सबरी के अंगना में साधु-संत अयलखिन्ह / विद्यापति**

सबरी के अंगना में साधु-संत अयलखिन्ह  
उठि सबरी नोर हे चरण हे पखाड़ि  
सबरी चन्द्रामृत हे लेलखिन्ह लय-लय भवन छेतार  
सबरी के अंगना में साधु-संत अयलखिन्ह  
उठि सबरी नोर रे बहाय…..  
माय तोरा हांटऊ सबरी  
बाप तोरा बरजऊ है  
आहे छोड़ू सबरी  
साधु-सन्त साथ  
सब समाज मिलि कड एक मत केलकिन्ह  
राम एकमत केलकिन्ह  
आहे सबरी के दियौ बनबास  
झालि खजुरिया सबरी  
आब काँखि जाबि लेलकई  
काँकि दाबि लेलकई  
भजन करैते रमि हे जाई  
माय तोरा बरजऊ सबरी  
बाप तोरा बरजऊ हे  
छोड़ू सबरी साधु-सन्त के साथ  
हिली लीयौ मिली हे लीयौ  
संग के सखी सब  
आहे भजन करैते रमि हे जाय  
साहेब कबीर गेलन्हि नीरगुणिया हे  
सन्तो भाई जानि लीयौ ने बिचारि  
आब सन्तो भैया लीयौ ने बिचारि

# **कोने नगरिया एलइ बरियतिया सुनु मोर साजन हे / विद्यापति**

कोने नगरिया एलइ बरियतिया सुनु मोर साजन हे  
कोने नगरिया भड गेल शोर सुन मोरा साजन हे  
कै लाख हाथी आबै कै लाख धोरबा  
सुनु मोरा साजन हे…..  
कै लाख पैदल बरियतिया  
सुनु मोरा साजन हे…..  
एक लाख हाथ आबै  
सवा लाख छोड़बा  
सुनु मोरा साजन हे…..  
सबा लाख पैदल बरियतिया  
सुनु मोरा साजन हे…..  
कथिये चढ़ल आबै  
कथिये चढ़ल आबै  
दशरथ रसिलबा  
सुनु मोरा साजन हे…..  
कथिये चढ़ल आबै  
लक्षुमन राम  
सुनु मोरा साजन हे…..  
हाथिये चढ़ल आबै  
दशरथ रसिलबा  
सुनु मोरा साजन हे…..  
घोड़बे चढ़ल लक्षमण राम  
सुनु मोरा साजन हे….

# **गे अम्मा बुढ़ी मईया / विद्यापति**

गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
कते गुण सिखलऊँ परदेस में  
आगे हमरा के छोड़लैं तीरहुत देस में गे  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गुनमा सिखौंलैं गे मईया  
अपन दरबार में गे…..  
आ कतइ जाक बैसलैं गे मिशचीनमा  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे मैया गे सैह मोन छलउ गे मैया  
गुणमा नई सिखबीतैं  
आब गाछ चढ़ाकइ छ जकां मारै छैं  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
तेजबऊ परनमा तीरहुत देस में  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
आई तई छी गे मईया  
आई तेजई छी गे परनमा  
अपने बैसलैं कोन राज में  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
सोरिये के घेर में गे मईया  
नूनमा जे खीलबितै गे  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
अबियऊ गे मईया अबियऊ तीरहुत देस में  
कोना क हेतई बालकडे गुहरिया गे  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे मईया कोना घर में कनै छै हमरा मईया  
कोन घर में कनै छै बहिनीया  
आगै कोने घर में कनै छै भगता इसतीरीया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
आगे गोसाडनिक घर में माई जे कानै छै  
ओसरा कानै गै बहीनीया  
कोने चार कानै भगता इसतीरीया गे  
गे अम्मा बुढ़ी मईया  
गे अम्मा बुढ़ी मईया

# **दया करु एक बेर हे माता / विद्यापति**

दया करु एक बेर हे माता  
कृपा करु एक बेर  
जहियाँ सँ माता आहाँ घर अयलऊँ  
दुख छोड़ि सुख नहिं भेल  
हे जननी दया करु एक बेर  
हे जननी…..  
जहिया सँ माता सुख देखइ लगलऊँ  
नग्र में भइ गेल शोर  
हे जननी…..  
कोने फुल ओढ़न माँ के  
कोन फुल पहिरन  
कोने फुल सोलहो सिंगार  
हे जननी दया करु एक बेर  
हे जननी…..  
बेली फुल ओढ़न माँ के  
चमेली फुल पहिरन  
अरहुल फुल सोलहो सिंगार  
हे जननी…..  
हे जननी दया…..  
पहिरी-ओढि काली कहवर गेली  
कुरय लगली अबला गोहारि  
हे जननी…..  
हे जननी दया करु…..

# **कोने फुल फुलनि माँ के आधी-आधी रतिया / विद्यापति**

कोने फुल फुलनि माँ के आधी-आधी रतिया  
हे जगतारिण माँ के…..  
कोने फुल फुलनि भिनसरिया  
हे जगतारिण माँ के…..  
बेली फुल फुलनि माँ के आधी-आधई रतिया  
हे जगतारिण माँ के…..  
चमेली फुल फुलनि भिनसरिया  
हे जगतारिण माँ के…..  
पहिर-ओढि काली गहवर ठाढि भेली  
करय लगली अबला के गोहारि  
हे जगतारिण माँ के…..

# **जगदम्ब अहीं अबलम्ब हमर / विद्यापति**

जगदम्ब अहीं अबिलम्ब हमर  
हे माय आहाँ बिनु आश ककर  
जँ माय आहाँ दुख नहिं सुनबई  
त जाय कहु ककरा कहबै  
करु माफ जननी अपराध हमर  
हे माय आहाँ बिनु आश ककर  
हम भरि जग सँ ठुकरायल छी  
माँ अहींक शरण में आयल छी  
देखु हम परलऊँ बीच भमर  
हे माय आहाँ बिनु आश ककर  
काली लक्षमी कल्याणी छी  
तारा अम्बे ब्रह्माणी छी  
अछि पुत्र-कपुत्र बनल दुभर  
हे माय आहाँ बिनु आश ककर  
जगदम्ब…..

# **भगबती चरनार बन्दिति की महा महिमा निहारु / विद्यापति**

भगबती चरनार बन्दिति की महा महिमा निहारु  
भगबती वनरुप काली हुललि रण में भय कराली  
भगबती दैरु बिपत्ति में  
सिन्धु सँ हमरा उबारु  
भगबती चरनार बन्दिति की महा महिमा निहारु  
कटीय असुर सीर खप-खप  
चाटि शोणित लाल-लप-लप  
हारि छल रहलाह हमर गण  
विकलता के क्रम निहारु  
भगबती चरनार बन्दिति की महा महिमा निहारु  
फूल जल चन्दन चढ़ेलऊँ  
बीनती जय संगीत गयलहुँ  
भगबती चरनार बन्दिति की महा महिमा निहारु

# **हे जननी आहाँ जन्म सुफल करु / विद्यापति**

हे जननी आहाँ जन्म सुफल करु  
पूजा करब हे अम्बे  
जशोदा-नन्दिनि त्रिभुवन वन्दिनि  
असुर निकन्दनि हे देबी  
हे जननी…..  
पूजा करब…..  
पुष्प-कमल पर चरण बिराजै  
माया दृष्टि करु हे देबी  
हे जननी…..  
पूजा करब…..  
आँचर पसारि हम पुत्र मंगै छी  
आब ध्यान दिय हे अम्बे  
हे जननी…..  
पूजा करब हे देबी

# **जयति जय माँ अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके / विद्यापति**

जयति जय माँ अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके  
सघन घन सँ मुक्ति कुन्तल भाल शोभित चण्डिके  
जयति जय माँ अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके  
हार मुण्डक हृदय शोभित श्रवण कुण्डल मण्डिते  
जयति जय माँ अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके  
बिकट आशन घोर बदने चपल रसने कालिके  
खर्ग खप्पर करहिं शोभित भति प्रण के पालिके  
जयति जय माँ अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके  
घनन-घन-घन नूपूरु गुञ्जित कपल पद लट राजिते  
दीप अभय वरदायिनी माँ जयति जय अपराजिते  
जयति जय माँ अम्बिके जगदम्बिके जय चण्डिके  
सघन घन सँ मुक्ति कुन्तल भाल शोभित चण्डिके

# **भजै छी तारिणी सब दिन कियै छी दृष्टि के झपने / विद्यापति**

भजै छी तारिणी सब दिन कियै छी दृष्टि के झपने  
जयन्ति मंगला काली शिबा-शिव नाम थीक अपने  
ने जानी नाम ने भ्रम सँ कदाचित् दोसरो सपने  
भजै छी तारिणी सब दिन कियै छी दृष्टि के झपने  
कहब हम जाय ककरा सँ अपन दुख दीनता थपने  
शरण एक अछि अहिंक अम्बे होयत की आन लग कनने  
कयह जगदीश सब दिन सँ भगत प्रतिपालिका अपने  
भजै छी तारिणी सब दिन कियै छी दृष्टि के झपने

# **बारह बरष पर काली जेती नैहर / विद्यापति**

बारह बरष पर काली जेती नैहर  
बारह बरष पर माता जेती नैहर  
माहे बिनु रे कहारे कोना जेती  
लाले-लाले डोलिया में सबजे रंग ओहरिया हे  
माहे लागि गेल बतसो कहारे  
एक कोष गेली काली दूई कोष गेली हे  
माहे तेसर कोष लागल पीयासे  
ओहार उठाये काली चारु दीसी त्कथि  
माहे कतहु ने लागल बजारे  
जांघिया के चीरी काली शोणित पिलनि  
माहे राखल जगत्र कर माने  
भनहि विद्यापति सुनू माता काली हे  
माँ हे सरा सँ दहब रक्षपाले।

# **जनम भूमि अछि मिथिला सम्हारु हे माँ / विद्यापति**

जनम भूमि अछि मिथिला सम्हारु हे माँ  
कनि आबि अपन नैहर निहारु हे माँ  
माँ बच्चे सँ महिमा जनई छी  
अम्बे-अम्बे कट हरदम रटई छी  
शक्तिशाली अपन महिमा देखाऊ हे माँ  
कनि आबि अपन नैहर निहारु हे माँ  
अछि बीच भंवर में नाब डुबल  
ओकर कियौ ने खबनहारी हे माँ  
कनि आबि अपन नैहर निहारु हे माँ  
अछि बालक आहाँके दुआरे पर ठार  
ओकर विद्या के भरि दीप भण्डार हे माँ  
कनि आबि अपन नैहर निहारु हे माँ

# **लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ / विद्यापति**

लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ  
गरदनि लगा लीचड माँ  
हे माँ गरदनि लग लीचड माँ  
हम सब छी धीया-पूता आहाँ महामाया  
आहाँ नई करबै त करतै के दाया  
ज्ञान बिनु माटिक मुरति सन ई काया  
तकरा जगा दिया माँ  
लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ  
गरदनि लगा लीचड माँ  
कोठा-अटारी ने चाही हे मइया  
चाही सिनेह नीक लागै मड़ैया  
ज्ञान बिनु माटिक मुरुत सन ई काया  
तकरा जगा दिया माँ…..  
आनन ने चानन कुसुम सन श्रींगार  
सुनलऊँ जे मइया ममता अपार  
भवन सँ जीवन पर दीप-दीप पहार भार  
तकरा हटा दिय माँ…..  
लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ  
गरदनि लगा लीचड माँ  
सगरो चराचर अहींकेर रचना  
सुनबई अहाँ नै त सुनतै के अदना  
भावक भरल जल नयना हमर माँ  
चरनऊ लगा लीचड माँ…..  
लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ  
गरदनि लगा लीचड माँ

# **क्यों देर करती श्रीभवानी मैं तो बुद्धिक हीन हे माँ / विद्यापति**

क्यों देर करती श्रीभवानी मैं तो बुद्धिक हीन हे माँ  
दाँत झक-झक हँसछि खल-खल  
मुख में पाकल पान हे माँ  
दमसि बैसलि असूर दलमे काटथि मुण्ड हमार हे माँ  
बाम करकट लेल खप्पर  
दहिना हाथ तलवार हे माँ  
दमसि बैसलि असूर दलमे काटथि मुण्ड हमार हे माँ  
क्यों देर करती श्रीमवानी मैं तो बुद्धिक हीन हे माँ  
कहथि काली सुनू हे दुर्गे  
अब त करीय उबार हे माँ  
तीन लोक के मातु दुर्गा दिय अभय बरदान हे माँ  
क्यों देर करती श्रीमवानी मैं तो बुद्धिक हीन हे माँ

# **हरी के मोहनी मुरतीया में मोन लागल हे सखी / विद्यापति**

हरी के मोहनी मुरतीया में मोन लागल हे सखी  
छाती छबि में भेल विभोर  
जहिना बिलखथि चन्द्र-चकोर  
हमरा जुलमी नजरिया केलक पागल हे सखी  
हरी के मोहनी मुरतीया में मोन लागल हे सखी  
मोहन मृदु-मृदु मुस्कान  
मुख लागल मृदु बान  
कारी केसिया में अंखियां ओझराएल हे सखई  
हरी के मोहनी मुरतीया में मोन लागल हे सखी  
सोचन कोमल कुमल समान  
जहिना नील गगन केर तान  
कारी केसिया में अंखिया ओझरायल हे सखी  
हरी के मोहनी मुरतीया में मोन लागल हे सखी

# **भजु राधे कृष्णा गोकुल में अबध-बिहारी / विद्यापति**

भजु राधे कृष्णा गोकुल में अबध-बिहारी  
द्वापर में रही जनम लीये हैं त्रेता कंस पछारी  
पाँव धुबति आहिल्या तर गयी कुबाजापति गिरधारी  
भजु राधे कृष्ण…..  
कहाँ रामके धनुष बीराजे कहाँ मटुक सीर भारी  
कोन भाग में सीता बीराजे कहाँ राधा प्यारी  
भजु राधे कृष्ण…..  
इहाँ रामके धनुष बीराजे वहाँ मटुक बड़ भारी  
बामा भागमें सीता बीराजे दहिना राधा प्यारी  
भजु राधे कृष्णम गोकुल में अबध-बिहारी  
घघन क्रोटि मेघ बरिसन लागे रक्षा करु गिरधारी  
एकहुँ बुन्द नहिं पड़य मथुरा में  
इन्द्र बैसल हीय हारी  
भजु राधे कृष्ण…..  
सूतल देबकी सूतन सुत-नन्दन रक्षा करु गिरधारी  
उग्रसेन के राज दियो हैं काल कंस के मारी  
भजु राधे कृष्ण…..  
कहाँ के हरी दधी बेयतु हैं कहाँ के ब्रजनारी  
लुटि-लुटि कहै कृष्ण कन्हाई अब जुनि करीय उघारी  
भजु राधे कृष्ण…..  
रावन मारि राम गृह आजोल  
कृष्ण कहे धनबाजि  
भजु राधे कृष्ण गोकुल में अवध बिहारी

# **नव जौबन नव नागरि सजनी गे / विद्यापति**

नव जौबन नव नागरि सजनी गे  
नव तन नव अनुराग  
पहु देखि मोरा मन बढ़ल सजनी गे  
जेहेन गोपी चन्द्राल  
बाधल वृद्ध पयोनित सजनी गे  
कहि गेलाह जीवक आदि  
कतेक दिन हेरब हुनक पथ सजनी गे  
आब बैसलऊँ जी हारि  
हम परलऊँ दुख-सागर सजनी गे  
नागर हमर कठोर  
जानि नहिं पड़ल एहेन सन सजनी गे  
दग्ध करत जीब मोर  
धरम जयनाथ गाओल सजनी गे  
कियो जुनि करय प्रीति  
धैरज धय रहु कलावति सजनी गे  
आज करत पहु रीती

# **फरल लवंग दूपत भेल सजनी गे / विद्यापति**

फरल लवंग दूपत भेल सजनी गे  
फल-फूल लुबधल डारि  
खोंइछा भरि तोरल फफरा भरि तोरल  
सेज भरि देल छीरियाय  
फूलक धमक पहुँ जागल सजनी गे रुसि चलल परदेस  
बारह बरख पर लौटल सजनी गे  
ककबा लैल सनेस ओहि ककबा लय थकरब सजनी गे  
रुचि-रुचि कैल सींगार  
भनहि विद्यापति गाओल सजनी गे  
पुरुषक नहिं विश्वास

# **लट छल खुजल बयस सजनी गे / विद्यापति**

लट छल खुजल बयस सजनी गे  
बैसल मांझ दुआरे  
ताहि अवसर पहु आयल सजनी गे  
देखल नयन पसारे  
एक हाथ केस सम्हारल सजनी गे  
अचरा दोसर हाथे  
पहु के पलंग चढि बैसल सजनी गे  
तखन करथि बलजोरे  
नहिं-नहिं जओं हम भाखीय सजनी गे  
तओं राखथि मन रोशे  
भनहि विद्यापति गाओल सजनी गे पुरुषक यैह बढ़ दोषे।।

# **तरुणि बयस मोही बीतल सजनी गे / विद्यापति**

तरुणि बयस मोही बीतल सजनी गे  
पहुँ बीसरल मोहि नामे  
कुसुम फूलि-फूलि मौललि सजनी गे  
भमरा लेल  
बिश्रा में  
चानन बुझि हम रोपल सजनि गे  
हिरदय कोरि थल देल  
नयनहुँ नीर पटाओल सजनी गे  
आखिर सिम्मर भेल

# **ई दिन बड़ दुर्लभ छल सजनी गे / विद्यापति**

ई दिन बड़ दुर्लभ छल सजनी गे  
देखब नन्द-दुलारे  
हरियर गोबर आंगन नीयब  
धुपहिं देब गमकाई  
करपुर लै हम पान लगाएब  
नीरमल जल पीयाई  
ई दिन बड़ दुर्लभ छल सजनी गे  
देखब नन्द-दुलारे  
लाल पलंग हम झारि ओझाएब  
रुनुकि-झुनुकि हम पहुँ घर जायब  
घूँघट लेब सम्हारि  
भनहि विद्यापति गाओल सजनी गे  
पुरुषक नहिं विश्वासे  
ई दिन बड़ दुर्लभ छल सजनी गे  
देखब नन्द-दुलारे

# **साओनर साज ने भादवक दही / विद्यापति**

साओनर साज ने भादवक दही।  
आसिनक ओस ने कार्तिकक मही।।  
अगहनक जीर ने पुषक धनी।  
माधक मीसरी ने फागुनक चना।।  
चैतक गुड़ ने बैसाखक तेल।  
जेठक चलब ने अषाढ़क बेल।।  
कहे धन्वन्तरि अहि सबसँ बचे।  
त वैदराज काहे पुरिया रचे।।

# **चानन रगड़ि सुहागिनी हे गेले फूलक हार / विद्यापति**

चानन रगड़ि सुहागिनी हे गेले फूलक हार।  
सेनुरा सँ संगिया भरल अछि हे सुख मास अषाढ़।।  
राजा गेलाह मृग मारन हे वन गेलाह शिकार।  
जोगी एक ठाढ़ अंगना में हे रानी सुनि लीय बात हमार।।  
द दिय भीक्षा जोगी के हे ओ त छोड़ता द्वार।।  
सावन बड़ा सुख दावन हे दु:ख सहलो ने जाय।  
इहो दुख होइहन्डु रानी कुब्जी के जो कन्त रखली लोभाय।।  
भादब भरम भयावन हे गरजै ढ़हनाय  
सबके बलम देखि घर में हे ककरा संग जाय  
आसिन कुमर आबि गेल हे कि ओ आब ने जिथि  
चीढ्ढी में लीखल वियोगिया हे हजमा हाथे देब  
कातिक परबहिं लागि गेल हे गोरी-गंगा-स्नान  
गंगा नहाय लट झारलऊँ हे सीथ लागे उदास  
अगहन सारी लबीय गेल हे फुटि गेल सब रंग धान  
प्रभुजी त छथि परदेसिया हे कियो भोगत आन  
पुसहिं ओसहिं गिड़ि गेल हे भीजि गेल लाम्बी-लाम्बी केस  
केसब सुखाबी ओसरबा हे सीथ लागे उदास  
माघहि मास चतुर्दशी हे शीब-ब्रत तोहार  
घुमि-फिरि अचलऊँ मन्दिरबा हे चित लागय उदास  
फागुन फगुआ खेलबितऊँ हे निरमोहिया के साथ  
प्रभुजी के हाथ पीचकारी हे उड़िते अतरी गुलाब  
चैतहिं बेली फूलाय गेल हे फूलि गेल कुसुम गुलाब  
फूलबा के हार गुथबितहुँ हे भेजितऊँ प्रभु के सनेश  
वैसाखहिं बंसबा कटबितऊँ हे रचि बंगला छेबाय  
ओहि दे बंगला बीच सुतितऊँ हे रसबेनिया डोलाय  
जेठहिं मास भेंट भा गोल हे पिरि गेल बारह मास  
प्रभुजी त एला जगरनाथ हे कन्त लीय समुझाय।।

# **चैत मास गृह अयोध्या त्यागल हानि से भीपति परी / विद्यापति**

चैत मास गृह अयोध्या त्यागल हानि से भीपति परी  
अलख निरञ्जन पार उतरि गेल तपसी के वेश धरी  
हो विकल रघुलाथ भये…..  
कहाँ विलमस हनुमान विकल रघुलाथ भये।  
धूप-दीप बिनु मन्दिर सुन्न भैल मास बैसाख चढ़ी  
सीमा बीना मन्दिर भेल सुना बन बीच कुहकि रही  
कहाँ विलमल हनुमान…..  
जेठ वान लगे लछमन के धरनी से मरक्षि खसी  
वैद्य सुखेन बताबय श्रीजमणि तब लछमन उबरी  
हो विकल रघुनाथ भये…..  
कहाँ विलमल हनुमान…..  
राम सुमरि बीड़ापान उठायल धवलगिरि चली  
मास अषाढ़ घटा-घन घहरे राम सुमरिक चली  
हो विकल रघुनाथ भये…..  
कहाँ विलमल हनुमान…..  
साबन सर्व सुहावन रघुबन सजमनि लेख न पटी  
दामिनि दमके तरस दिखाबे जब मोन सब घबरी  
हो विकल रघुनाथ भये…..  
कहाँ विलमल हनुमान…..  
भादब परबत भोर उखारल बुन्दक मार परी  
निसि अन्धयारी पंथ नहिं सूझल राम सुमरि क चली  
हो विकल रघुनाथ भये…..  
कहाँ विलमल हनुमान…..  
आसिन मास देखे रघुबर जी देखि लथुमन हहरी  
सीता सोचती सोचे रघुबरजी लछुमन सुधि बिसरी  
हो विकल रघुनाथ…..  
कहाँ विलमल हनुमान…..  
अगहन रघुबर आशिष मांगथि हर्षित सब भई  
ओहि अबसर अञ्जनिसुत अचला सब मोन हर्षित भई  
हो विकल रघुनाथ भये…..  
कहाँ विलमल हनुमान…..

# **अगहन दिन उत्तम सुख-सुन्दर घर-घर सारी / विद्यापति**

अगहन दिन उत्तम सुख-सुन्दर घर-घर सारी समाय  
रतन बयस सँ मोन सुख सुन्दर से छोड़ने कोना जायव  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
पूष कोठलिया ऊँच अटरिया, तकिया तुराय  
अतर, गुलाब, सेन्ट गमकायब अतेक मजा कहाँ पाएब  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
माधक सेला सचे हूमेला जैब बिदेसर धाम  
पान सुपारी जरदा खाएब घुमब शहर बजार  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
फागून फगुआ दूनू मिली खेलब घोरब रंग अबीर  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
अतर गुलाब, सेन्ट गमकाएब घोटि-घोटि धारब अबीर  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
चैतहिं बेली फुलय बनबेली, अद फुलय कचनार  
सेहो फूल लोढि-लोढि हार बुनाएब भेजब पीयाजी के पास  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
बैसाखक ज्वाला करे मोन ब्योला सोने मुढी बेनिया डोलारब  
कोमल हाथ सँ बेनिया डोलाएब अतेक मजा कहाँ पाएब  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
जेठहिं कान्त कतय गमाओल आयल अषाढ़क मास  
लाल रे पलंगिया घरहिं ओछाएब सेवा करब अपार  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
सावन-भादब के मेघबा गरजै जुनि मेघ बरसु आजु  
कोना क बालमु पार उतरताह नै रे नाव करुआर  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..  
आसिन-कातिक के पर्व लगतु हैं सब सखी गंगा-स्नान  
बिना बालमुजी के नीको ने लागय  
पुरि गेल बारह मास  
ललन ससुरारि छोड़ि कोना जाएब…..